कागज़ का हंस

मॉली

एक आदमी ने एक बार व्यस्त सड़क पर एक रेस्तरां शुरू किया. उसे अच्छा खाना बनाना और उसे लोगों को खिलाना बहुत पसंद था. वो सुबह से रात तक काम करता था और खुश रहता था.
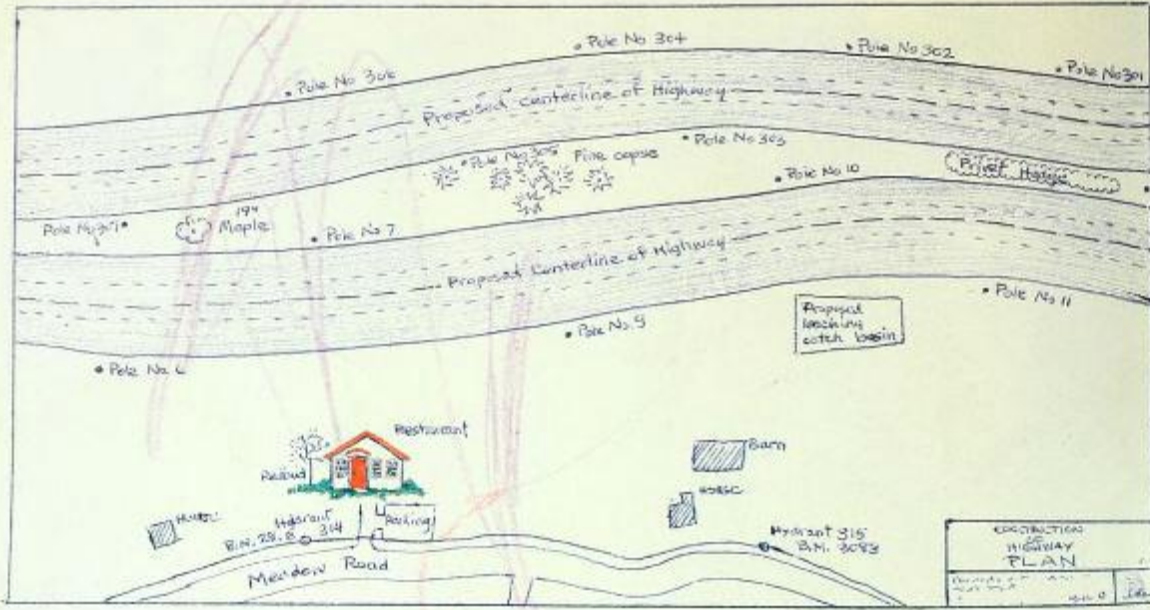
लेकिन फिर पास ही में एक नई हाईवे बनी. अब यात्री एक स्थान से दूसरे स्थान पर सीधे हाईवे से जाते और कोई भी उसके रेस्तरां में नहीं रुकता. कई दिन ऐसे भी गुज़रे जब रेस्तरां में कोई भी ग्राहक नहीं आया. वो आदमी कंगाल हो गया. खाली प्लेटों और मेजों की धूल साफ़ करने के अलावा अब उसके पास और कोई काम नहीं बचा.
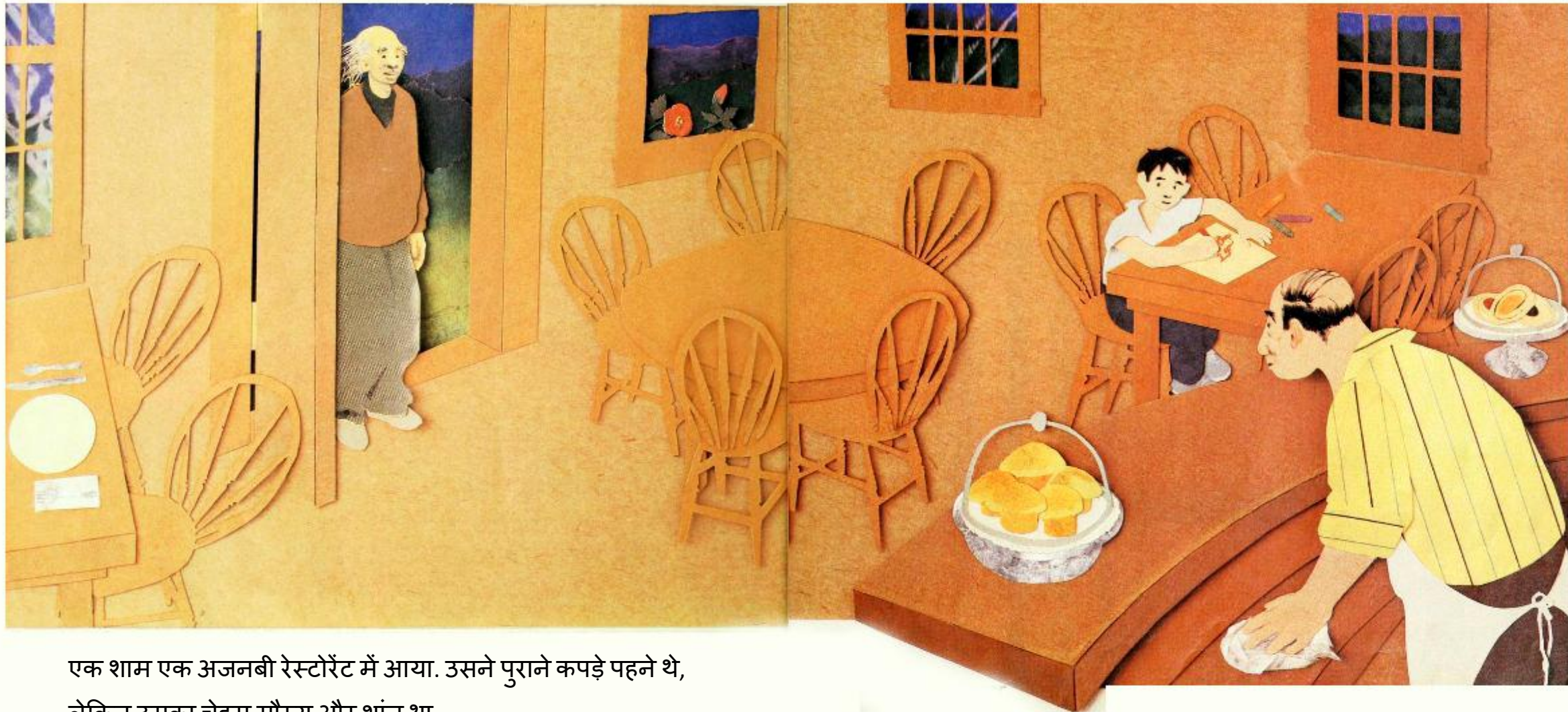
एक शाम एक अजनबी रेस्टोरेंट में आया. उसने पुराने कपड़े पहने थे,
लेकिन उसका चेहरा सौम्य और शांत था.

उसने पहले ही बता दिया कि उसके पास खाने के लिए पैसे नहीं थे. लेकिन फिर भी मालिक ने उसका स्वागत किया. उसने बेहतरीन भोजन पकाया और अजनबी को बहुत प्रेम से खिलाया.

खाने के बाद अजनबी ने अपने मेजबान से कहा, "मैं आपको पैसे नहीं दे सकता, लेकिन मैं आपको अपने तरीके से धन्यवाद दूंगा."

फिर अजनबी ने टेबल से एक पेपर नैपकिन उठाया और उसे एक हंस (क्रेन) के आकार में मोड़ा. "आपको केवल अपने हाथों से ताली बजानी है," उसने कहा, "और फिर यह पक्षी जीवित हो उठेगा और आपके लिए नाचेगा. आप इसे रखें, और जब तक यह आपके साथ है, तब तक आप इसका आनंद लें." यह कहकर अजनबी वहां से निकल गया.
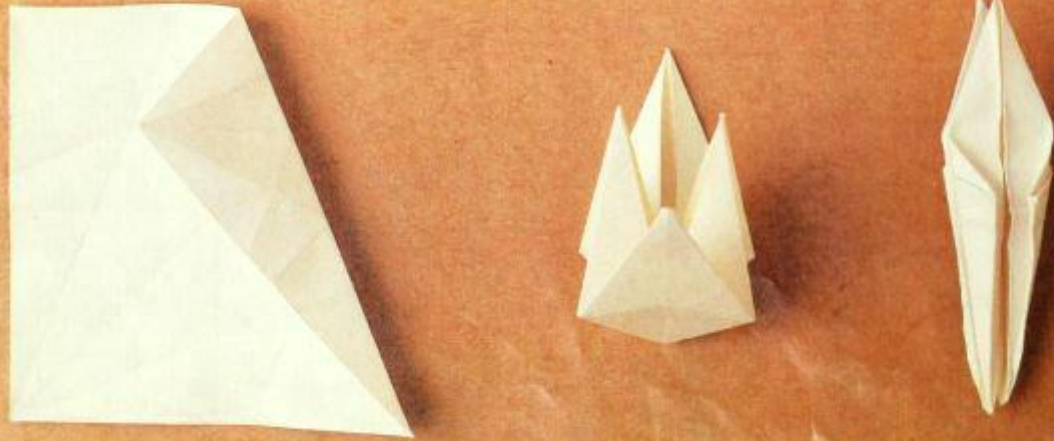
और वैसा ही हुआ जैसे अजनबी ने कहा था. मालिक ने अपने हाथों से ताली बजाई और फिर कागज का हंस तुरंत एक जीवित पक्षी बन गया. वो फर्श पर उड़ा और नृत्य करने लगा.

जल्द ही "नाचने वाले हंस" की शोहरत पूरे इलाके में फ़ैल गई.

दूर-दूर से लोग उस जादुई हंस को देखने के लिए आने लगे.
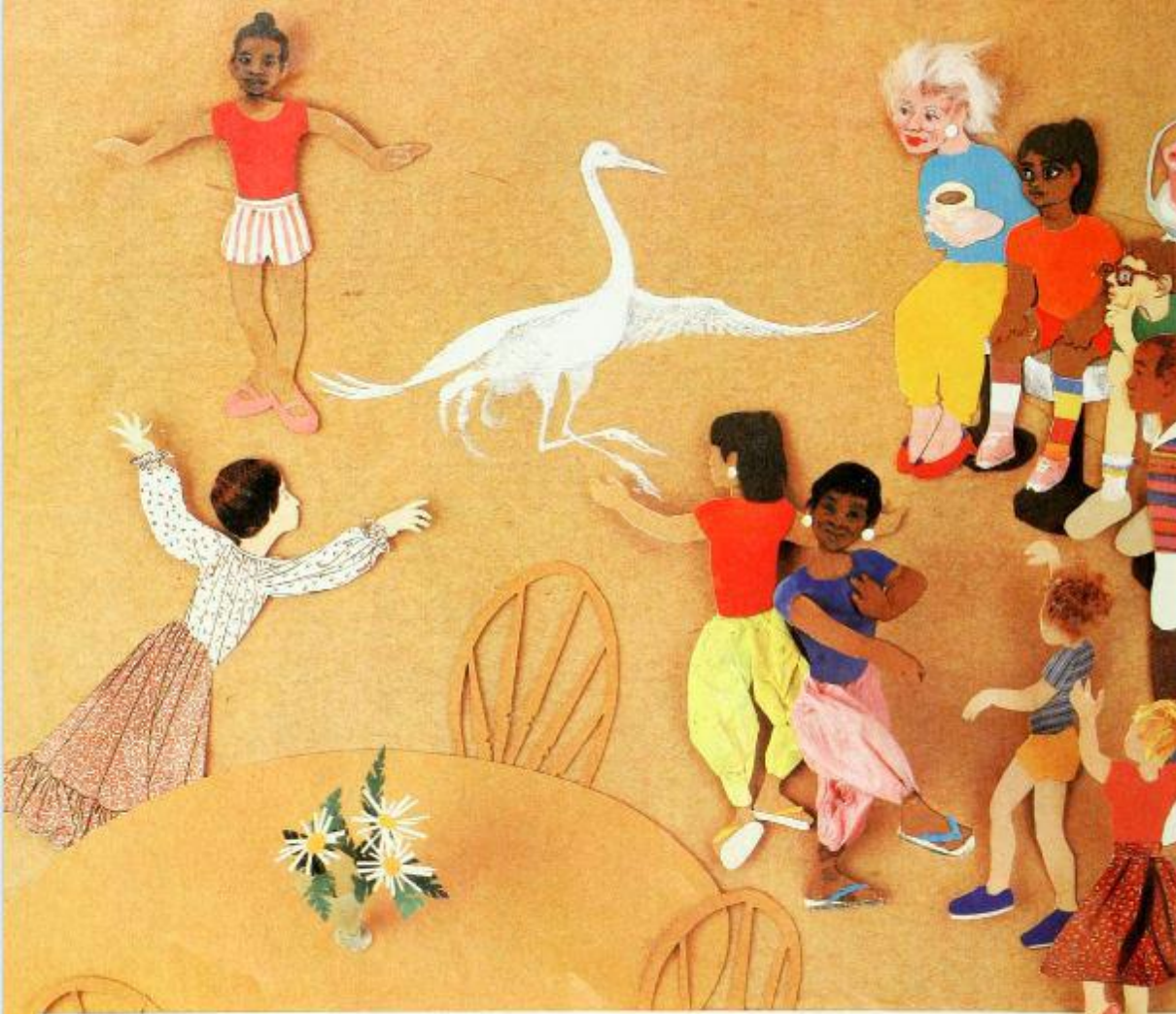
मालिक फिर से खुश हुआ, क्योंकि अब उसका रेस्तरां हमेशा ग्राहकों से भरा रहता था.

अब वो सुबह से रात तक खाना बनाता और ग्राहकों को खिलाता.
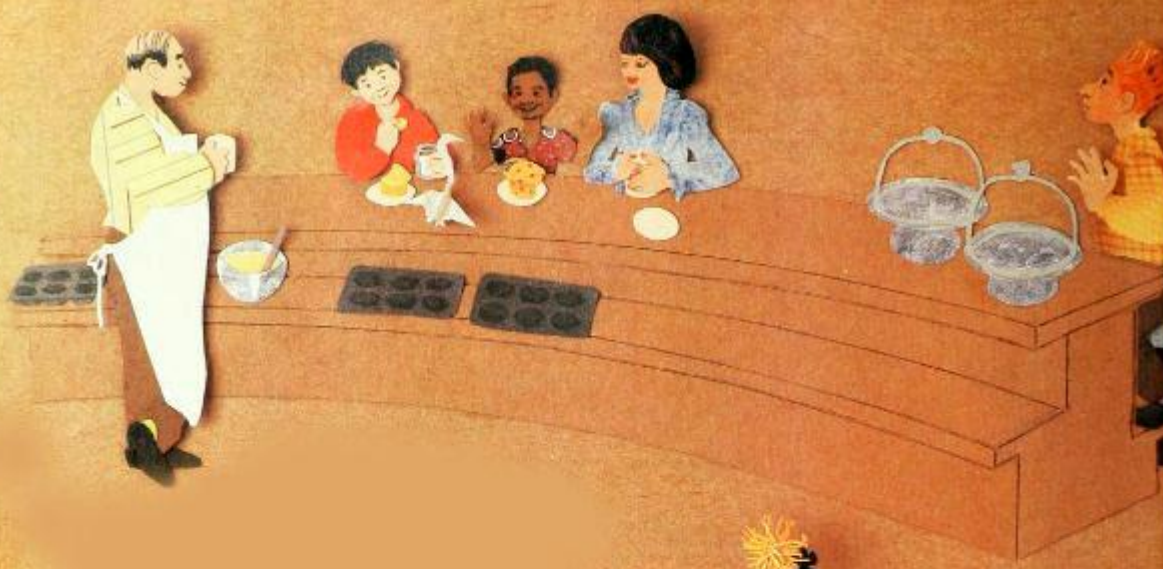
इस तरह हफ्ते बीते.

महीने बीते.
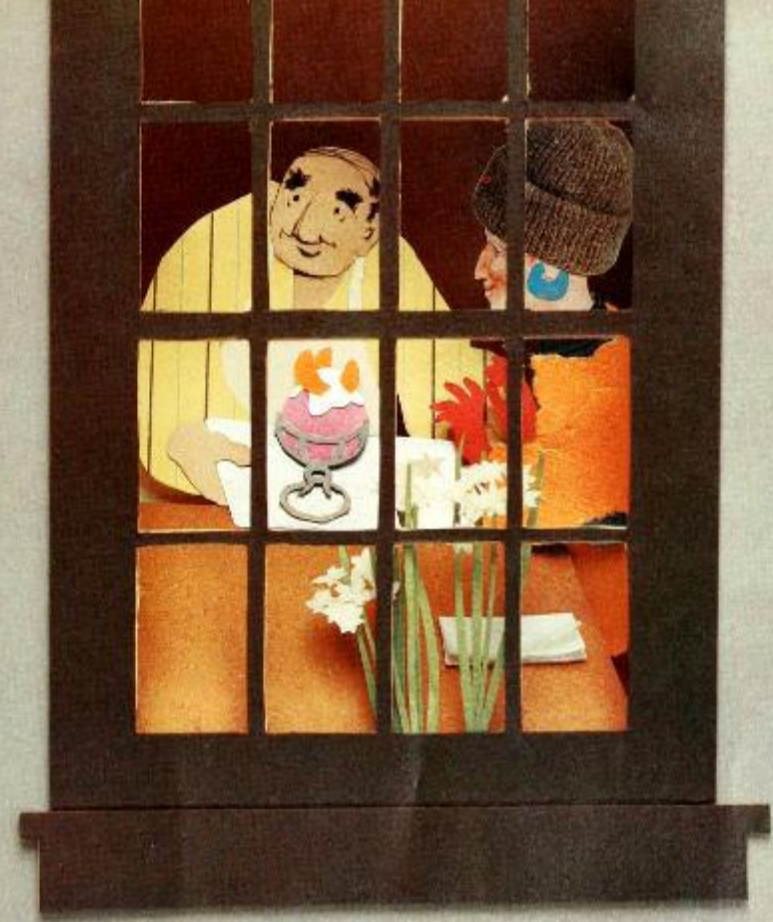
फिर एक शाम एक आदमी रेस्तरां में आया. उसके कपड़े पुराने और खराब थे, लेकिन उसका चेहरा सौम्य और शांत था. मालिक उसे देखते ही पहचान गया और बहुत खुश हुआ.
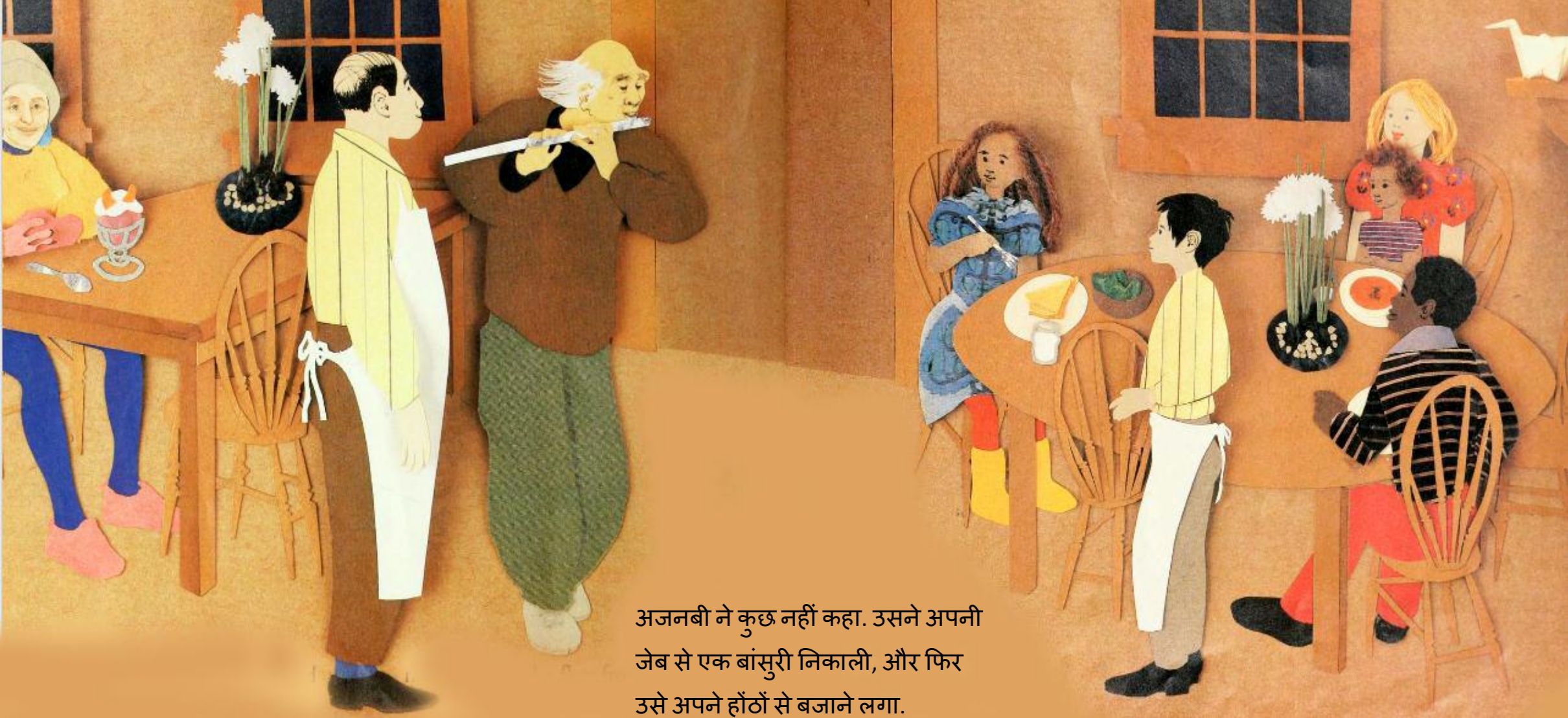
अजनबी ने कुछ नहीं कहा. उसने अपनी
जेब से एक बांसुरी निकाली, और फिर
उसे अपने होंठों से बजाने लगा.

संगीत सुनकर हंस शेल्फ पर अपनी जगह
से नीचे उड़ा और नृत्य करने लगा. इतना
सुन्दर नृत्य वो पहले कभी नहीं नाचा था.

कुछ देर बाद अजनबी ने बांसुरी बजाना बंद की और उसे
अपनी जेब में वापस रखा. वो हंस की पीठ पर चढ़ गया,
और फिर वे दोनों दरवाजे से बाहर उड़ गए.
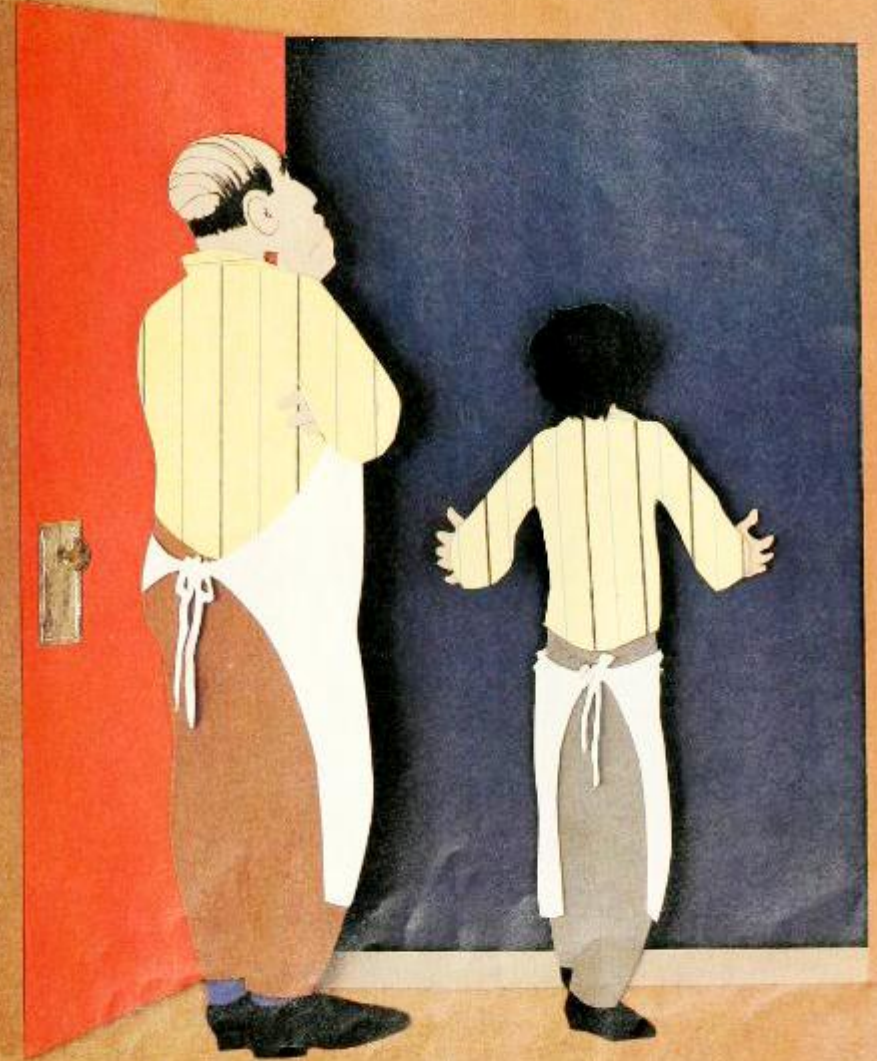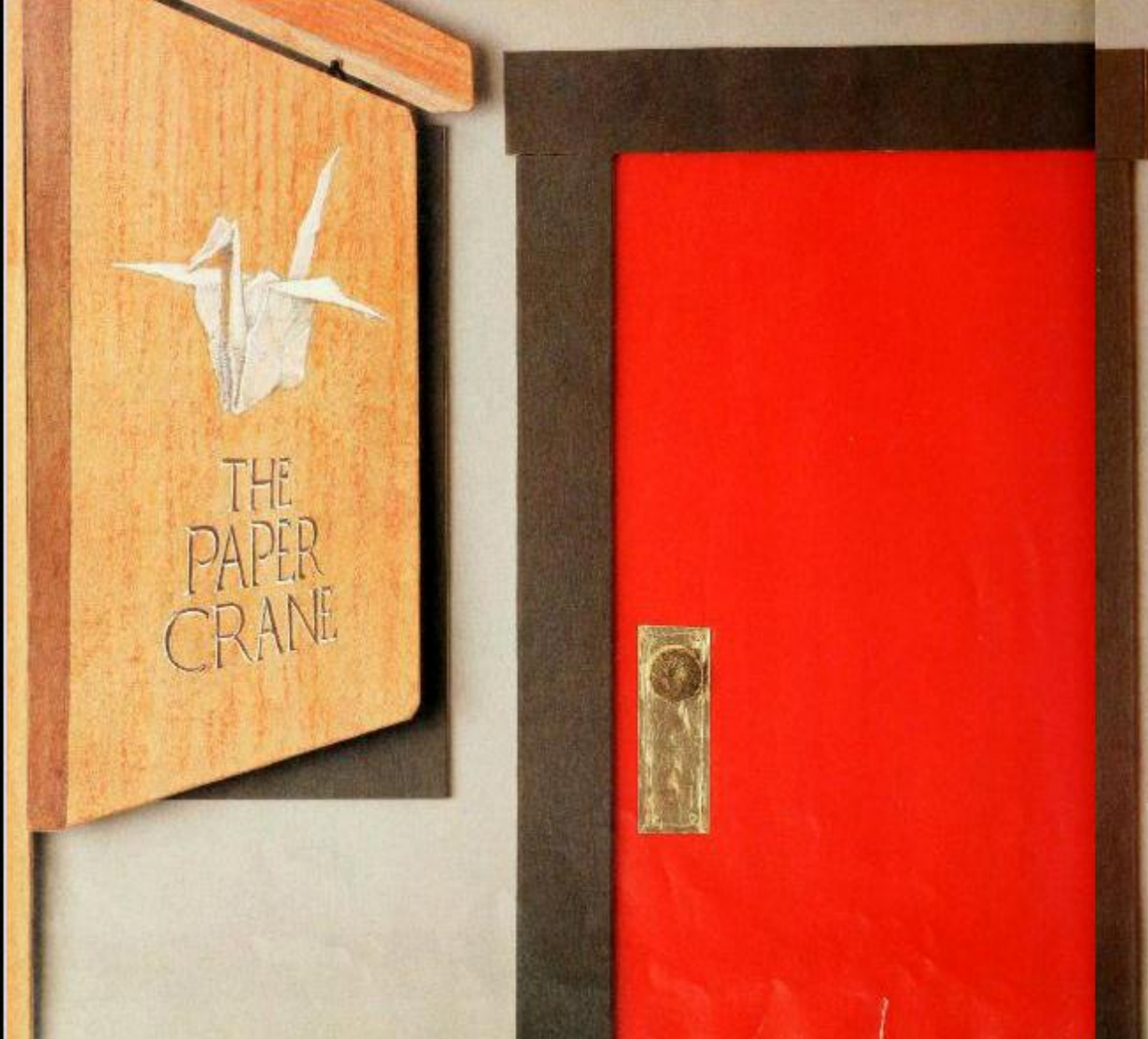
रेस्तरां अभी भी सड़क के किनारे खड़ा है, और ग्राहक अभी भी वहां अच्छा भोजन खाने आते हैं. वे उस सौम्य अजनबी और कागज़ के नैपकिन से बने हंस की कहानी भी सुनते हैं. लेकिन उसके बाद वो अजनबी और नाचने वाला हंस दुबारा कभी दिखाई नहीं दिए.

समाप्त